भारत–नेपाल संबंधो के बदलते आयाम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(28 मई 2008 से 2023 तक)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के सामाजिक विज्ञान संकाय, राजनीति विज्ञान विभाग,में

पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध सार

शोधार्थी

नीरज कुमार आलोक

पंजीयन संख्या : ....

द्वारा

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञानविभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ. मीना मालखंडी

सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष,

राजनीति विज्ञान विभाग

गुरु नानक कॉलेज कॉलेज, धनबाद

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

मार्च, 2024

भारत–नेपाल संबंधों के बदलते आयाम :एक विश्लेषणात्मकअध्ययन

(28 मई 2008 से 2023 तक)

परिचय

ऐसी मान्यता है कि भारत के अयोध्या के श्रीराम की शादी नेपाल के जनकपुर के राजा जनक की पुत्री सीता से हुई थी। उसी समय से भारत तथा नेपाल के लोगों के बीच वैवाहिक एवं पारिवारिक संबंध भी निरंतर देखे जाते रहे हैं। जिसे रोटी–बेटी के रिश्ते के नाम से जाना जाता है।

प्रांरभ से ही भारत एवं नेपाल के संबंध परस्पर सहयोगात्मक एंव मैत्रीपूर्ण रहे हैं। ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषायी इत्यादि स्तरों पर दोनों देशों में काफी निकटता है। पूर्णतः स्थलरूद्ध देश नेपाल, भारत एवं चीन के साथ अपनी अंतर्राष्ट्रीय–सीमा को साझा करता है। भारत तथा नेपाल के बीच 1770 किलो मीटर लंबी भारत–नेपाल सीमान्त रेखा है। इस सीमा रेखा का सीमांकन ब्रिटिश–शासन तथा नेपाल के बीच 1816 की सुगौली–संधि के आधार पर किया गया था। यह अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा भारत के 5 राज्यों उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम को स्पर्श करती है। शेष भारत से 7 पूर्वोत्तर राज्यों को जोड़ने वाले पश्चिम बंगाल स्थित लगभग 20–22 किलोमीटर चौड़े तथा लगभग 60 किलोमीटर लंबे सिलीगुड़ी–कॉरिडोर (जिसे चिकेन नेक के नाम से जाना जाता है), के एक तरफ बांग्लादेश तो दूसरी तरफ नेपाल स्थित है। इस कॉरिडोर (गलियारा) पर कुछ विदेशी–षड़यंत्रकारियों की कुत्सित–दृष्टि जगजाहिर है। सिलीगुड़ी–कॉरिडोर पर आँच आने का तात्पर्य है–भारत का अपने सातो पूर्वोत्तर–राज्यों से संपर्क–भंग हो जाना।[1]

आधारभूत–संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण–विकास, सामुदायिक–विकास संबंधी विभिन्न परियोजनाओं में भारत प्रांरभ से ही व्यापक पैमाने पर नेपाल की वित्तीय–मदद करता रहा है। भारत प्रारंभ से ही नेपाल का प्रमुख व्यापारिक भागीदार रहा है। 1950 की व्यापार तथा वाणिज्य संधि के अनुसार दोनों देशों के आर्थिक संबंधो का नियंत्रण होता था।हिमालयी सरहद से घिरा हुआ स्थलरूद्ध देश नेपाल कोयला, गैस, पेट्रोलियम के लिए अपने पड़ोसियों भारत तथा चीन की तरफ देखता है। इसलिए चीन के पाले में जाने से बँचाने के उदेश्य से भारत प्रांरभ से ही इन चीजों का निर्यात नेपाल को करता रहा है। साथ ही 2009 में भारत–नेपाल के बीच हुए व्यापारिक–समझौते के तहत नेपाल को भारतीय बाजार तक शुल्क–मुक्त पंहुच की सुविधा भी प्रदान की गई है।[2]

किन्तु अब कालापानी एवं सुस्ता क्षेत्र विवाद, 1950 के भारत–नेपाल समझौते में संशोधन करने की नेपाली मांग, 2015 में भारत द्वारा अघोषित रूप से की गई नेपाल की आर्थिक–नाकेबंदी, नवंबर 2015 में 500 रूपये एवं 1000 रूपये के विमुद्रीकरण के समय सेन्ट्रल बैंक ऑफ नेपाल के

विमुद्रीकृत–बिलो को स्वीकार करने से भारत द्वारा इनकार करना, 2015 मे नेपाली–संविधान मे बदलाव, मधेशी–आंदोलन के पीछे भारतीय हाथ होने का संदेह, भारत द्वारा नेपाल में शुरू की गई कुछ परियोजनाओं की सुस्त गति इत्यादि के साथ–साथ नेपाल एवं चीन के बीच बढ़ती नजदीकी की वजह से भारत–नेपाल संबंधों में खटास दिखने लगी है।

2008 में नेपाल में राजशाही की समाप्ति एवं लोकशाही की शुरूआत हुई। किन्तु संविधान के मजबूत, समावेशी एवं त्रुटिरहित नहीं होने की वजह से वहाँ प्रायः राजनीतिक अस्थिरता के स्थिति देखने को मिलती है। नेपाल में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. की निरंतर बढ़ती गतिविधियाँ, नेपाल के रास्ते नकली नोटों एवं मादक पदार्थों की तस्करी एवंविशेषकर चीन के द्वारा नेपाल में बढ़ती दखलंदाजी की वहज से भौगोलिक, व्यापारिक, सामरिक इत्यादि दृष्टिकोणों से नेपाल के मोर्चे पर खतरे की घंटी बजनी शुरू हो गई है।[3]

भारत के लिए नेपाल के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि नेपाल की अखंडता, स्वतंत्रता, स्वायत्तता निरंतर बनी रहे।

इसलिए इस शोध–प्रस्ताव के इस प्रस्तावित विषय भारत–नेपाल संबंधों के बदलते आयामः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन(28 मई 2008 से 2023 तक) पर शोध–कार्य की जाएगी।

साहित्य–समीक्षा

भारत–नेपाल संबंधो के बदलते आयाम के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से इसमें ज्ञान के अन्तर को जानने एवं इस विषय–चयन की औचित्य–स्थापना के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की प्रारंभिक–समीक्षा की गईः–

1. चौहान, राजीव (2010), *भारत और नेपाल के सामरिक संबंध,*आकृति प्रकाशन, नई दिल्ली
2. श्रीवास्तव, डॉ० एस.पी.एल. (2018),भारत–नेपाल संबंध : चुनौतियाँ एवं समाधान, ए एस आर पब्लिकेशन, लखनऊ
3. देवी, डॉ० मुकेश (2017), *नेपाल–चीन के बढ़ते संबंध : भारत की सुरक्षा चिंता,*ब्लू रोज पब्लिशर्स,
4. शुक्ल, डॉ कृष्णानन्द (2011), *भारत–नेपाल,* राज प्रकाशन,नई दिल्ली
5. बघेल, बी.एस. (2017), *भारत–नेपाल संबंधों में चीन की भूमिका,* बुक क्राफ्ट पब्लिकेशन,
6. चर्तुवैदी, शैलेन्द्र कुमार (1993), *भारत–नेपाल संबंध,* बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली

राजीव चौहान द्वारा लिखित पुस्तक "भारत और नेपाल के सामरिक संबंध" में नेपाल की भू सामरिक स्थिति, प्रशासन 1951 में संवैधानिक राजतंत्र की शुरूआत के साथ महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रम शाह की नियुक्ति से लेकर 2001 में वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह की हत्या एवं फिर ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह के राजा बनने पर प्रकाश डालने के साथ साथ नेपाल के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए भारत नेपाल संबंधों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ0 एस पी एल श्रीवास्तव की पुस्तक– "भारत–नेपाल संबंध : चुनौतियाँ एवं समाधान" में भारत और नेपाल के बीच सुरक्षा–चुनौतियों, मधेसी– आंदोलन, भारत–नेपाल संबंधों में चीनी घुसपैठ पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ0 मुकेश देवी द्वारा लिखित पुस्तक "नेपाल–चीन के बढते संबंध: भारत की सुरक्षा चिंता" में भारत–नेपाल संबंधो को प्रभावित करने वाले कारकों, नेपाल–चीन के बढते संबंधों की वजह से भारत की बढती सुरक्षा–चिंता इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ0 कृष्णानन्द शुक्ल के द्वारा लिखित नेपाल–चीन के बढते संबंध : भारत की सुरक्षा चिंता में चीन के द्वारा नेपाल में विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर बढती दखलंदाजी करते हुए नेपाल को अपने प्रभाव में लेने की कोशिशो पर प्रकाश डाला गया है।

बी.एस. बघेल द्वारा लिखित भारत–नेपाल संबंधो में चीन की भूमिका में भी नेपाल के साथ चीन के बढते आर्थिक, सामरिक संबंधों के बारे में बताया गया है। साथ ही इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि कैसे भारत–चीन के इन बढते संबंधो की वजह से भारत–नेपाल संबंधों में क्रमशः दूरी दिखने लगी है।

शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी की पुस्तक भारत–नेपाल संबंध में नेपाल के साथ भारत के विभिन्न प्रकार के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही यह दर्शाने की कोशिश की गई है कि कैसे भारत तथा नेपाल के संबंध प्रारंभ से ही काफी मधुर रहे हैं। किंतु अब मादक पदार्थो तथा नकली नोटों की तस्करी, नेपाल के तराई प्रदेशों में भारत विरोधी मुहिम तथा चीन के साथ नेपाल के बढ़ते संबंधों की वजह से भारत–नेपाल संबंध पूर्व की तुलना में उदासीन दिखने लगे है।

इन पुस्तकों की प्रारंभिक समीक्षा के आधार पर यह प्रतीत हुआ कि 13 साल लंबे चले गृहयुद्ध की वजह से 240 साल पुरानी राजशाही की समाप्ति के पश्चात् 28 मई 2008 को एक गणतांत्रिक राष्ट्र बन चुके नेपाल एंव 26 जनवरी 1950 को गणतांत्रिक राष्ट्र बन चुके भारत के आपसी द्विपक्षीय–संबंधों में निरंतर आ रहे उतार–चढ़ाव पर प्रकाश डालने की संभावनाएँ मौजूद है।

विभिन्न पुस्तको से प्राप्त द्वितीयक–आकडो एव शोध कार्य के दौरान प्राथमिक आकडो को सग्रहित करके उनका विश्लेषण करने के पश्चात् भारत–नेपाल सबधो को पुन बेहतर बनाने सबधी कुछ प्रभावी सुझाव दे पाने की संभावना है। यही कारण है कि इस प्रस्तावित विषय पर शोध–कार्य करने की पूरी गुजाईश है।

शोध समस्याएँ–

उपरोक्त प्रस्तावित शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है:–

- भारत तथा नेपाल के बीच के प्राचीन सहयोगात्मक मैत्रीपूर्ण रिश्ते में पिछले कुछ समय से खटास उत्पन्न करने वाले विवादित मुद्दो का अध्ययन किया जाएगा।
- विशेषकर 28 मई 2008 के बाद नेपाल में चीन की निरंतर बढती राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक दखलदांजी की समीक्षा की जाएगी।
- भारत–नेपाल के प्राचीन सहयोगात्मक, मैत्रीपूर्ण संबंधों में अब क्रमश: उदासीनता, नकारात्मकता एवं कटुता के मूल कारणों का पता लगाया जाएगा।

अनुसंधान के उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

- भारत एवं नेपाल के बीच के विवादित मुददों एवं उनके विवाद के कारणों की पहचान करना।
- राजशाही काल के नेपालीशासन एवं राजशाही–समाप्ति के पश्चात् के नेपाली शासन के भारत के साथ संबंधों पर भी संक्षिप्त प्रकाश डालना।
- नेपाल पर चीन के निरंतर बढ़ते प्रभाव के विभिन्न कारणों की पहचान करना तथा इसका भारत पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- भारत–नेपाल संबंधों को पुनः प्रगाढ़ बनाने हेतुविभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

इस प्रस्तावित शोध–कार्य मे परिकल्पना के निम्नलिखित बिन्दु दिखते है :–

- नेपाल के प्रति भारत अपने सहयोगात्मक एव मैत्रीपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन पूर्व की ही भाँति सही तरीके से कर रहा है।
- भारत–नेपाल के बीच संबंधो मे कडवाहट लाने की कोशिशों के पीछे प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से चीन कीभूमिका है।
- भारत.नेपाल के साथ अपने द्विपक्षीय संबधों को मजबूती प्रदान करके पुनः सहयोगात्मक एवं मैत्रीपूर्ण प्रगाढ़ संबंधों की स्थापना हेतु निरंतर प्रयत्नशील है।

शोध–कार्यप्रणाली

इस शोध–कार्य में गुणात्मक–विधि का समावेशन होगा। जिसमें ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक पद्तियों/विधियों का उपयोग किया जाएगा।

इस प्रस्तावित शोध–कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग होगा। **प्राथमिकसामग्री** के रूप में भारत स्थित नेपाली दूतावास में किए जाने वाले साक्षात्कार, भारत स्थित विदेश मंत्रालय में नेपाल का कार्य देखने वाले सक्षम प्राधिकृत से होने वाले साक्षात्कार, काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास में साक्षात्कार, भारतमें निवास करने वालेनेपाली मूल के लोगों से साक्षात्कार, नेपाल स्थित कुछ कॉलेजों एवं विश्वविधालयों के विधार्थियों एवं नेपाल में ही निवास कर रहे वहाँ के कुछ नागरिकों से प्रश्नावली आधारित सर्वे,भारत के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से भविष्य में होने वाले प्रश्नोत्तरी–आधारित सर्वे को शामिल किया जाएगा।

जबकि **द्वितीयक–सामग्री** के रूप में भारत–नेपाल संबंधो पर उपलब्ध दर्जनों पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं के संबंधित लेखों, भारत के विदेश मंत्रालय के साथ–साथ भारतीय एवं नेपाली दूतावासों के आधिकारिक बेबसाईटों पर समय–समय पर उपलब्ध होते रहने वाली आवश्यक संबंधित जानकारियों का उपयोग किया जाएगा।

महत्व

इस प्रस्तावित शोध–कार्य की सफलतापूर्वक समाप्ति पर प्राप्त होने वाले निष्कर्षों के आधार पर इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के रूप में देखा जा सकेगा–

- 28 मई, 2008 के बाद से भारत–नेपाल संबंधों की प्रगाढ़ता में आने वाली कमी के विभिन्न कारणों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

- द्विपक्षीय संबधों के खटास को दूर करने हेतू नेपाल के प्रति भारत के द्वारा एवं भारत के प्रति नेपाल के द्वारा उठाने जाने योग्य कुछ आवश्यक एवं ठोस कदमों की जानकारी मिल सकेगी।
- भारत–नेपाल संबंधों को पुन: मधुर एवं प्रगाढ़ बनाने की दिशा में सहायक साबित होने की संभावना रखने वाला विश्लेषण–आधारित एक सुझावात्मक–रिपोर्ट साबित हो सकेगा।

अनुसंधान की सीमाएँ एवं भविष्य–कार्य

अनुसंधान की सीमाएँ

इस प्रस्तावित शोध–कार्य मे अनुसंधान की सीमाओं के तौर पर निम्नलिखित बिन्दु दिख रहे हैं–

- नेपाली मूल के लोगों से ऑकड़ों के संग्रहण हेतु बातचीत करने के दौरान भाषा संबंधी समस्या।
- प्राथमिक स्रोतों की तुलना मे द्वितीयक स्रोतों (पुस्तकों इत्यादि) पर ज्यादा निर्भरता।
- भारतीय मूल के लोगों की तुलना में नेपाली मूल के लोगों तक सीमित पहुँच हो पाने की वजह से उनके विचारों को उस व्यापकता तक प्राप्त नहीं कर पाने की संभावना। 05/09
- लक्षित एवं सम्पर्कित जनसंख्या के पूर्वाग्रह से ग्रसित होने की संभावना।

भविष्य कार्य

- इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर भविष्य में भारत–नेपाल संबंधो पर गहनता से काम करने की गुंजाईश रहेगी।
- भारत–नेपाल द्विपक्षीय संबंधो को दृढ़ बनाने हेतु सुझाव देने की संभावनाएँ बनेंगी।

संभावितअध्यायीकरण

प्रस्तावित शोध–कार्य के विषय–वस्तुओं को निम्नलिखित अध्यायों के रूप में क्रमबद्ध तरीके से दर्शाया जा सकता है–

प्रस्तावना

अध्याय–1

- भारत–नेपाल संबंधों का परिचय : ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में

अध्याय– 2

- भारत तथा नेपाल साम्राज्य के बीच (27 मई 2008 तक) के द्विपक्षीय संबंध

अध्याय–3

- भारत नेपाल संबंध (28 मई 2008–2023) : चुनौतियाँ एवं समाधान।

अध्याय–4

- भारत–नेपाल संबंधो मे चीन के हस्तक्षेप का बढ़ता प्रभाव।

अध्याय–5

- वैश्वीकरण एवं वर्तमान भू–राजनीति का भारत–नेपाल संबंधों पर प्रभाव।

निष्कर्ष

संन्दर्भ–सूची

06/09

1. श्रीवास्तव, डॉ0 एस. पी. एल, सिंह, डॉ0 करूणेन्द्र, कुमार डॉ0 प्रमोद (2018), *भारत–नेपाल संबंध: चुनौतियाँ एवं समाधान*, असर प्रकाशन, प्रथम संस्करण
2. चौहान, राजीव कुमार (2010), *भारत और नेपाल के सामरिक संबंध*, आकृति प्रकाशन, प्रथम संस्करण
3. देवी, डॉ0 मुकेश (2017), *नेपाल चीन के बढ़ते संबंध: भारत की सुरक्षा चिन्ता*, ब्लू रोज पब्लिकेशन
4. शुक्ल, डॉ कृष्णानन्द (2011), *भारत–नेपाल*, राज प्रकाशन
5. बघेल, बी.एस. (2017), *भारत–नेपाल संबंधों में चीन की भूमिका*, बुक क्राफ्ट पब्लिकेशन
6. चर्तुवेदी, शैलेन्द्र कुमार (1993), *भारत–नेपाल संबंध*, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली

ग्रन्थ– सूची

1. श्रीवास्तव, डॉ0 एस. पी. एल, सिंह, डॉ0 करूणेन्द्र, कुमार डॉ0 प्रमोद (2018), *भारत–नेपाल संबंध: चुनौतियाँ एवं समाधान*, असर प्रकाशन प्रथम संस्करण
2. चौहान, राजीव कुमार (2010), *भारत और नेपाल के सामरिक संबंध*, आकृति प्रकाशन, प्रथम संस्करण

3. देवी, डॉ0 मुकेश (2017), *नेपाल चीन के बढ़ते संबंध: भारत की सुरक्षा चिन्ता,* ब्लू रोज पब्लिकेशन
4. शुक्ल, डॉ कृष्णानन्द (2011), *भारत–नेपाल,* राज प्रकाशन
5. बघेल, बी.एस. (2017), *भारत–नेपाल संबंधो में चीन की भूमिका,* बुक क्राफ्ट पब्लिकेशन
6. चर्तुवैदी, शैलेन्द्र कुमार (1993), *भारत–नेपाल संबंध,* बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली
7. अग्रवाल, निर्मला (2003), *भारत–नेपाल संबंध (1950 की शांति) एवं मैत्री संधि के संदर्भ में एक अध्ययन,* ए.बी.डी. पब्लिशर्स, जयपुर, इंडिया
8. चर्तुवैदी, शैलेन्द्र कुमार (1993), *भारत–नेपाल संबंध,* बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली
9. चौधरी, स्वाति रंजन (2015), *भारत–नेपाल संबंध : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण,* न्यू बुक्स पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण
10. नायक, निहार आर. (2014), स्ट्रैटजिक हिमालयाज: रिपब्लिकन नेपाल एण्ड एक्टर्नल पावर्स
11. पाण्डेय, आर.एस. एंव पाण्डेय बी. आर. (1988) : *राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध,* प्रकाश बुक डिपो, बरेली
12. पांडे, निश्चल नाथ (जुलाई 2003), *नेपाल फॉरन पॉलिसी विज–ए–विज इंडिया एंड चाइना "द सिक्युरिटी इम्परेटिव्स,* आउटलुक नेपाल 2003, एडिटर : हारन्न रियाज क्रेस्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
13. बघेल, बी.एस. (2017), *भारत–नेपाल संबंधों में चीन की भूमिका,* बुक क्राफ्ट पब्लिकेशन
14. मुखर्जी, प्रणव, *द प्रेसिडेन्शियल इयर्स*
15. मुनि, एस. डी. (1992), *इण्डिया एण्ड नेपाल: ए चेंजिंग रिलेशनशिप*
16. मुनि, एस. डी. (2016), *फॉरेन पॉलिसी ऑफ नेपाल*
17. यादव, डॉ0 भुपेन्द्र सिंह (2022), भारत–नेपाल संबंध, समसामयिक अध्ययन, इविन्सपब पब्लिकेशन
18. रामाकांत (1968), इण्डो नेपालीज रिलेशन्स
19. शुक्ल, डॉ कृष्णानन्द (2011), भारत–नेपाल, राज प्रकाशन
20. सिंह, डॉ0 आभा (2018), *भारत–नेपाल संबंध : एक राजनीतिक अध्ययन,* अंकित प्रकाशन
21. सिंह, अशोक कुमार (1999) : *अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा रक्षा अध्ययन,* प्रकाश बुक डिपो, बरेली

(शोध–पत्र)

1. कुशवाहा, महेन्द्र किशन सिंह, *"नेपाल चीन संबंध का भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव"* 22 अगस्त, 2019

2. कौर, हरसिमरन, *नेपाल एज ए फैक्टर इन इंडियाज सिक्युरिटी कंटेमपररी इश्यूज एंड कसर्नस*, 12 मई , 2021
3. गौतम बलराम, *नेपाल का चीन और भारत से व्यापार तथा नेपाली अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव*, 22 जून 2021
4. पाठक, ओकार, *नेपाल का बदलता बहू–राजनीति व बहू–सामरिक परिदृश्य एवं भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन*, 26 अक्टूबर 2020

(लेख)

1. **झा प्रशान्त, इंडियाज नेपाल पॉसिली** : *ए बैलेंसिंग एक्ट विटवीन काठमांडू एवं तराई,* हिंदुस्तान टाईम्स, (20 सितम्बर 2016)
2. **मुखर्जी शिवशंकर,***इंडिया शुड इग्नोर क्रिटिसिज्म ऑफ ईट्स नेपाल पॉसिली, कंटिन्यू हवाट इट इज डूइंग,* टाईम्स ऑफ इण्डिया, (25 सितम्बर 2015)

(समाचार–पत्र)

1. दैनिक जागरण, 26 अप्रैल, 2015, रविवार, मुख्य पृष्ठ

(पत्रिकाएँ)

1. इंडिया टूडे
2. नया संदेश, काठमाण्डू, साप्ताहिक
3. नेपाल न्यूज, काठमाण्डू
4. नेपाल समाचार
5. फॉरेन अफेयर्स जर्नल, काठमांडू